अथायुर्भावफलाध्यायः

आयुः स्थानाधिप केन्द्र में बैठा हो तो जातक को दीर्घायु प्रदान करता है। अष्टमेश पाप ग्रह के साथ रहकर अष्टम भाव में ही स्थित हो तो जातक अल्पायु होता है और लग्नेश अष्टम में हो तो भी अल्पायु होता है। जिस प्रकार अष्टमेश से आयु का विचार किया जाता है उसी प्रकार शनि तथा दशमेश से भी आयु का विचार करना चाहिए।

षष्ठेश या व्ययेश षष्ठ, व्ययभाव में हों अथवा लग्न, अष्टत भाव में बैठे हों तो दीर्घायु योगकारक होते हैं। लग्नेश या अष्टमेश अपनी राशि में या स्वनवमांश में अपनी मित्र राशि में हों तो दीर्घायुकारक होते हैं। लग्नेश, अष्टमेश, दशमेश और रानि केन्द्र, त्रिकोण में हों अथवा लाभ स्थान में हों ताक दीर्घायु योगकारक होते हैं। इस प्रकार अनेक प्रकार से आयुर्दाय का विचार करना चाहिए । इनमें भी जो सब से बलवान हो, उसी के अनुसार आयुर्दाय का विचार करना चाहिए ।

अष्टमेश केन्द्र में हो और लग्नेश बलहीन हो तो 20वर्ष से 32 वर्ष तक उस जातक की परमाणु होती है। अष्टमेश अपने नीच राशि का हो और अष्टमेश पाप ग्रहयुक्त हो तो और अष्टम तथा व्ययभाव में पापग्रह स्थित हो तो जातक जन्म लेते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह हों, 6,8 में शुभ ग्रह हो, अष्टमेश अपने नीच राशि का होकर लग्न में बैठा हो तो जातक का शीघ्र ही मरण होता है । पनचम भाव पाप ग्रहयुक्त हो

और अष्टमेश अष्टमभाव में हो और चन्द्र पानपग्रह से युक्त हो, उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक का 1 माष में मरण होता है।

लग्नेश अपने उच्चराशि में, चन्द्र लाभ स्थान में बैठा हो और अष्टम स्थान में गुरू स्थित हो तो दीर्घायु योग होता है, इसमें सन्देह नहीं है। लग्नेश अत्यन्त बलवान हो एवं केन्द्र स्थित शुभ ग्रहों द्वारा देखा जाता हो तो धन और समस्त गुणों से युक्त दीर्घायुकारक योग होता है।

पराशर जी कहते हैं कि हे विप्र! अब मैं आपके आगे नवम भाव मे फल को कहता हूँ । भाग्येश बलयुक्त हाकर भाग्यस्थान में ही स्थित हो तो वह जातक परम भाग्यशाली होता है। भाग्यस्थान में गुरू हो और भाग्येश केन्द्र में स्थित हो तथा लग्नेश बलयुक्त हो तो वह जातक अधिक भाग्यस्थान में गुरू हो और भाग्येश केन्द्र में स्थित हो तथा लग्नेश बलयुक्त हो तो वह जातक अधिक भाग्यवान होता है। बलवान भाग्येश शुरू के साथ भाग्यस्थान में हो और लग्न से केन्द्र में गुरू बैठे हों तो उस जातक का पिता भाग्यस्थान में हो और लग्न से केन्द्र में गुरू बैठे हों तो उस जातक का पिता भाग्यशाली होता है। भाग्यस्थान से द्वितीय अथवा चतुर्थ भाव में भौर हो और भाग्येश अपने नीच राशि में हो तो उस जातक का पिता निर्धन होता है। भाग्येश अपने परमोच्च राशि में हो और भाग्यभाव के नवमांश में गुरू हो तथा लग्न से चतुर्थ में शुरू हो तो उस जाताक का पिता दीर्घायु होता है। भाग्येश केन्द्रभाव में स्थित हो और गुरू के द्वारा दृष्ट हो तो उस जातक का पिता वाहनों से युक्त, राजा के सदृश होता । भाग्येश कर्मभाव में हो और कमेंश भाग्यराशि में स्थित हो एवं शुभ ग्रह द्वारा अवलोकित हो तो उस जातक का पिता धनी एवं यशस्वी होता है।

सूर्य अपने परमोच्च (मेष 10 अंश) पर हो और भाग्येश लाभस्थान में स्थित हो तो जातक धर्मात्मा, राजा का प्रिय और पितृभक्त होता है। लग्न से

त्रिकोण में सूर्य हो और सप्तम भाव में भाग्येश हो एवं गुरू से युक्त या दृष्ट हो तो वह जातक पितृभक्त होता है।

भाग्येश धनभाव में हो और धनेश भाग्यस्थान में हो तो उस जातक को 32 वें वर्ष के अनन्तर भाग्योदय, वाहनसुख एवं यश प्राप्त होता है।

यदि लग्नेश भाग्य स्थान में षष्ठेश के साथ हो तेा पिता–पुत्र में परस्पर वैर होता है।

कर्मेश, विक्रमेश एवं भाग्येश निर्बल, नीच तथा अस्तंगत हों तो जातक भिक्षु होता है!

शुक्र अपने परमोच्च में भाग्येश के साथ स्थित हो और तृतीय स्थान में शानि हो तो जातक अनेक प्रकार से भाग्यवान होता है। भाग्यस्थान में गुरू हो और भाग्येश केन्द्र में हो तो 20 वें वर्ष के पश्रचात् जाततक भाग्यवान होता है। बुध अपने परमोच्च राशि में स्थित हो और भाग्येश भायस्थान में ही हो तो 36 वें वर्ष के अनन्तर जातक बहुत भाग्यवान होता है। लग्नेश भाग्य राशि में हो और भाग्येश लग्न से युक्त हो तथा सप्तम भाव में गुरू हो तो धन–वाहन का लाभ कराने वाला होता है।

भाग्य भाव से नवम में राहु और भाग्येश अष्टमस्थ हो अथवा अपनी नीच राशि का हो तो वह जातक भाग्यरहित होता है। भाग्य भाव में शनि चन्द्र से युक्त ँहो, लग्नेश अपनी नीच राशि का हो तो जातक भिक्षा माँग कर अपना जीवन–यापन करता है।

हे द्विजवर! इस न्रकरी मैंने संक्षेप में भाग्सफल को कहा है। लग्नेश और भाग्येश के शुभ–अशुभ स्थान–स्थिति के अनुसार पूर्वोक्त फल के अतिरिक्त और भी विशेष फल समझ कर बताना चाहिए।